रेल रश्मि

अंक : 77, दिसंबर 2018

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका

मुख्य संपादक की कलम से....

सर्वप्रथम नव वर्ष पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

जीवन का एक–एक पल अत्यधिक मूल्यवान होता है। पल–पल का सदुपयोग करके ही ज्ञान का अखंड भंडार ऋषियों–मुनियों ने खोजा और इस संसार को सुगमता से उपलब्ध कराया। सृष्टि की संरचना के साथ ही काल चक्र का भी निर्धारण कर दिया गया। ग्रहों और उपग्रहों की गति का निर्धारण किया गया। चार युगों की परिकल्पना, वर्ष मासों और विभिन्न तिथियों का निर्धारण काल गणना का ही प्रतिफल है। यह काल कल्पना वैज्ञानिक सत्यों पर आधारित है। मनुष्य ने काल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने के उद्देश्य से कालचक्र को नियंत्रित करने का भी प्रयास किया। उसने विक्रम संवत्, शक–संवत्, हिजरी सन्, ईसवी सन् आदि की परिकल्पना की। जैन और बौद्ध मतावलंबियों ने अपने–अपने ढंग से काल गणना के सिद्धांत बनाये। हमारे देश में नव संवत्सर का प्रारंभ विक्रम संवत् के आधार पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से स्वीकार किया जाता है और पाश्चात्य दृष्टि से पहली जनवरी को नव वर्ष का शुभारंभ होता है।

नया साल नई उम्मीदें और उत्साह लेकर आता है। लोग नए साल में अच्छी यादें लेकर प्रवेश करते हैं और बुरी यादें पुराने साल में छोड़ आते हैं। इतना ही नहीं अपनी गलत आदतों को त्यागने और अपनी जीवनचर्या में सुधार के संकल्प भी लेते हैं। हम नव वर्ष का स्वागत भारतीय अथवा पाश्चात्य किसी भी दृष्टि से करें, कैसे भी संकल्प लें हमारा उद्देश्य सकारात्मक और परिवार, समाज व राष्ट्र को जोड़ने वाला होना चाहिए। इस विषय पर विचार करें कि जैसा सकारात्मक भाव हम अपने प्रति रखते हैं, क्या हम दूसरों के प्रति भी वैसा ही सकारात्मक भाव रख पाते हैं?

'रेल रश्मि' पत्रिका भी नए वर्ष में सकारात्मकता के भाव के साथ अपने उत्साही और प्रतिभावान रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करती है। उनके रचनात्मक सहयोग से ही इस अंक में साहित्यिक, तकनीकी व स्वास्थ्य विषयक विविध लेखों को शामिल किया जा सका है। साथ ही, इस अंक में संघ की राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का भी समावेश किया गया है।

आशा है यह अंक आप सुधि पाठकों को पसंद आएगा। आपके अमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ताकि पत्रिका के स्तर में और भी सुधार लाया जा सके।

एक बार पुनः नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ!

(पुरुषोत्तम दास शर्मा)
मुख्य राजभाषा अधिकारी

रेल रश्मि

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

अंक : 77 दिसंबर, 2018

संरक्षक:

राजीव अग्रवाल

महाप्रबंधक

✪

मुख्य संपादक:

पुरुषोत्तम दास शर्मा

मुख्य राजभाषा अधिकारी

✪

उप मुख्य संपादक:

अम्बरीश प्रकाश पाण्डेय

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

✪

संपादक:

ध्रुव कुमार श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी

✪

उप संपादक:

अनामिका सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

✪

संपादन सहयोग:

संजीव कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

पता :

राजभाषा विभाग

मुकाधि कार्यालय परिसर

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

टेलीफोन- **62852** एवं **62859** (रेलवे)

0551-2203396

ईमेल- **seniorol9@gmail.com**

इस अंक में

विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
रेल यात्रियों की अजीबोगरीब आदतें (लेख)	डा. एस. के. सैनी	5
हिरनावती (लोक-कथा)	डा. राजेश हजेला	7
सदैव प्रासंगिक रहेंगे 'अज्ञेय' (साहित्य)	डा.कृष्ण चंद्र लाल	12
लोक संस्कृति की अध्यात्म-भूमि और बाजार की संस्कृति (लेख)	डा. आद्या प्रसाद द्विवेदी	14
अपना-अपना पुजापा (लघु कथा)	सुधीर कुमार चंदन	17
महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा; शुरूआत घर से (आलेख)	सतविंदर कौर	18
आकलन (कहानी)	दुर्गेश चन्द्र ओझा	19
नियति (कहानी)	सुरभि श्रीवास्तव	21
ज्ञान-प्रसार की प्राचीन परंपरा (लेख)	सुनील कुमार	23
मैथिलीशरण गुप्त और साकेत (लेख)	अनामिका सिंह	25
भारतीय रेल में डीईएमयू का महत्व (तकनीकी)	अनुज कुमार श्रीवास्तव	28
छितौनी-बगहा परियोजना (संस्मरण)	एल.एन. मालवीय	29
दिल ही तो है (स्वास्थ्य)	अजय दूबे	31
गौतम बुद्ध (लेख)	डा.एच.पी.सक्सेना	33
सूरदास के नेत्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव (लेख)	डा.हरिशंकर कुमार सिन्हा	35
खुद पर भरोसा हो तो दुनिया आपकी (लेख)	श्याम बाबू शर्मा	39
कैसे करें आईटीआर ई-फाइलिंग (आलेख)	नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव	41
भीम प्रसाद की यथार्थपरक कहानियां और अनूठे निबंध (समीक्षा)	कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव	42
कविता, गीत एवं ग़ज़ल		
तरीक़ा बचाव का (कविता)	बी.आर.विप्लवी	43
हिंदी से आज हिंदुस्तान मिलने है चला (कविता)	ए.पी.पाण्डेय	44
दो गजलें	सैयद मुहम्मद असलम	45
ग्लानि (कविता)	दीक्षा	46
शमा बुझने को है (कविता)	घनश्याम आई.काने	46
दो कविताएं	प्रमोद लायटू	47
दो कविताएं	किरन श्रीवास्तव	48
नयी सदी का भूखा (कविता)	रामाश्रय यादव	49
दो गजलें	मुकेश प्रधान	50
परिश्रम (कविता)	संजय प्रसाद	51
राजभाषा संबंधी सांविधानिक उपबंध		52

नि:शुल्क वितरण हेतु

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)